मितानिन पाती

मितानिन की बातें-मितानिन की ख़बरें

परिकल्पना एवं निर्माण : राज्य स्वास्थ्य संसाधन केन्द्र, छत्तीसगढ़

मितानिन दिवस-2021

मितानिनों का योगदान महत्वपूर्ण : सफीरा

■ नवभारत रिपोर्टर | जगदलपुर.
www.navbharat.news

मितानिन दिवस के मौके पर महापौर श्रीमती सफीरा साहू ने बलीराम कश्यप वार्ड की मितानिनों को साड़ी और श्रीफल देकर सम्मानित किया. मितानिन दिवस के उपलक्ष्य में वार्ड की मितानिन बहनों को संबोधित करते महापौर ने कहा कि जिस भाव से समाज में अपनी सेवाएं इनके व्दारा दी जाती हैं, उसकी जितनी सराहना की जाए कम है.

उन्होंने कहा कि हर क्षेत्र में मितानिन बहनों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है. मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने मितानिनों के कल्याण के लिए मितानिन कल्याण कोष की स्थापना की है, जिससे सभी मितानिनों को बेहतर तरीके से सहायता मिल सके. मितानिन बहनें अपना कार्य बेहतर तरीके से कर सकें. इस दौरान एमआईसी सदस्य यशवर्धन राव, पार्षद बी ललिता राव, एनयूएचएम के सीपीएम पीडी बस्तिया के अलावा वार्ड की मितानिनें मौजूद थीं.

कैलाश नगर में मितानिनों का किया सम्मान

दुर्ग (चैनल इंडिया)। नगर निगम दुर्ग के अंतर्गत आने वाले वार्ड क्रमांक 19 कैलाश नगर तितुरडीह में 23 नवम्बर को मितानिन दिवस मनाया गया और उनका सम्मान किया गया।

इस अवसर पर उल्लेखनीय कार्य करने वाली मितानिनों चित्रलेखा सेन पूर्णिमा कौशल बबिता तांडी बंटी महानन्द गायत्री विश्वकर्मा कलावती चौहान सावित्री ठाकुर हेमलता साहू योगेश्वरी साहू एवं लक्ष्मी साहू का सम्मान किया गया। इस अवसर पर पालन चक्रधारी नगर निगम दुर्ग के एल्डरमेन हरीश साहू पूर्व सभापति राजकुमार नारायणी दान बाई तामस्कर पार्षद काशीराम रात्रे अनिल सूर्यवंशी रज्जु साहू दीपक साहू महिला कांग्रेस उपाध्यक्ष खुशी निर्मलकर राकेश साहू गोपी यादव अनिल देशमुख लालजी वर्मा एवं शहर जिला कांग्रेस कमेटी के सचिव शिव वैष्णव उपस्थित थे।

मितानिनों का किया गया सम्मान

■ नवभारत रिपोर्टर | रायपुर.
www.navabharat.news

मितानिन दिवस पर मंगलवार को कलेक्टोरेट परिसर स्थित रेडक्रास सभाकक्ष में मितानिनों का सम्मान किया गया. कार्यक्रम में जिला पंचायत रायपुर की अध्यक्ष डोमेश्वरी वर्मा मुख्यअतिथि थीं. उन्होंने सभी ब्लॉक से पहुंची मितानिनों को प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया.

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी रायपुर डॉ. मीरा बघेल ने मितानिनों के कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि कोविडकाल जैसे कठिन समय पर भी मितानिनों ने मन लगाकर अच्छे से कार्य किया और लोगों को जागरूक करने और टीकाकरण के लिए प्रेरित करने जैसे कई कार्य किए. मितानिन को-आर्डिनेटर प्रियंका ने बताया कि छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में मितानिन कार्यक्रम वर्ष 2002 से संचालित किया जा रहा हैं. मितानिन एक स्वयं सेवी कार्यकर्ता होती हैं.

किया सम्मान, कहा- यहीं ह

भास्कर न्यूज़ | कोरबा

जिले भर में मंगलवार को मितानिन दिवस मनाया गया। इस दिन जगह जगह में उनके सम्मान में कार्यक्रम आयोजित किए गए। मितानिनों को गिफ्ट देकर तो कहीं उन्हें फूल देकर सम्मानित करते हुए उनका मनोबल बढ़ाया गया। शासकीय हाई स्कूल दर्री में समाज सेवी व शाला विकास व प्रबंधन समिति के मनीष अग्रवाल, बैजनाथ माहेश्वरी, प्राचार्य मीना साहू की उपस्थिति में क्षेत्र की मितानिनों को सम्मानित किया

शासकीय हाई स्कूल दर्री में सम्मान करते अतिथि।

मितानिनें स्वास्थ्य विभाग का सबसे महत्वपूर्ण अंग-सिंहदेव

'छत्तीसगढ़' संवाददाता

अंबिकापुर,23 नवम्बर। प्रदेश के पंचायत एवं स्वास्थ्य मंत्री टी. एस. सिंह देव ने मितानिन दिवस पर मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी के कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम को वर्चुअल माध्यम से संबोधित करते हुए कहा कि मितानिनों का कार्य ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवा करना है। सेवा के कार्य में सर्वाधिक समर्पण की जरूरत होती है। जितना समर्पण से सेवा किया जाएगा, उतना ही लाभ जनता को मिलेगा और लोगों का जीवन बेहतर होगा।

श्री सिंह देव ने कहा कि आप मितानिन बहन हमारे स्वास्थ्य विभाग का सबसे महत्वपूर्ण अंग हैं एवं अंतिम व्यक्ति तक स्वास्थ्य सुविधा पहुंचे, उसे बेहतर इलाज मिले इसके लिए प्रतिबद्ध हैं, आप लोगों के कार्य एवं समर्पण को मेरा प्रणाम है। आम सब ने वैश्विक महामारी कोरोना के दौर में जिस ईमानदारी, निष्ठा एवं समर्पण के साथ कार्य किया वह काबिले तारीफ है। सरगुजा के मितानिन बहनों को संबोधित करते हुए स्वास्थ्य मंत्री सिंह देव ने कहा

कि जिले में कोरोना के प्रसार को रोकने में आप सबका कार्य बेहद महत्वपूर्ण था। आप सभी इसी तरह समाज में कार्य करें ताकि सभी स्वास्थ्य एवं निरोग रहें।

छत्तीसगढ़ में मितानिन कार्यक्रम को दो दशक का समय हो गया। मितानिन मतलब देश के अन्य राज्यों में आशा कार्यकर्ता। जब आज से 20 वर्ष पहले, अविभाजित दुर्ग जिले वर्तमान में दुर्ग, बालोद, बेमेतरा जिला के गुण्डरदेही विकासखण्ड को मितानिन मॉडल कार्यक्रम के लिए चुना गया था, तब यह कल्पना नहीं थी कि यह पूरा कार्यक्रम इस तरह से फैलेगा और हजारों-लाखों महिलाओं और बहनों के हाथों प्रदेश के स्वास्थ्य व्यवस्था का एक मॉडल काम करेगा। आज यह सफलता पूरे छत्तीसगढ़ में एक लाख से अधिक ग्रामीण और शहरी मितानिनों की सच्ची निष्ठा और लगन से काम का ही नतीजा है।

पिछले दो दशक में मितानिन बहनों ने प्रदेश में सेवा का एक ऐसा मॉडल विकसित किया है, जिसने हम सब को बताया है, जीवन के लिए हमारा स्वास्थ्य रहना बेहद जरूरी है। ऐसे जीवन जिया जाये, जिससे बीमारी को खुद से दूर रखा जाये। बीमार होने का मूल कारण जीवन यापन में बदलाव का नतीजा है। खानपान में बदलाव, प्रदूषित

जीवन के कारण बीमारी है। आधुनिकतावाद, भौतिकवाद, दिखावा और पाश्चात्य जीवन शैली से बचना चाहिए। यही जागरूकता का काम छत्तीसगढ़ में मितानिन बहनें कर रहीं हैं।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी के कार्यालय सभाकक्ष में आयोजित उक्त सम्मान कार्यक्रम में सरगुजा के संभागीय संयुक्त संचालक स्वास्थ्य सेवायें डॉ पी.एस. सिसोदिया, डॉ. वर्षा, शेखर राव, डॉ. प्रीति मानिकपुरी, प्रशांत कश्यप, अजय राजवाड़े, शिव तिर्की, आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ अमीन फिरदौसी शहरी कार्यक्रम प्रबंधक ने किया। इस अवसर पर शहरी क्षेत्र की वरिष्ठ मितानिन बहनों का सम्मान किया गया।

मितानिनों का किया गया सम्मान

दुर्ग। मितानिन दिवस पर मितानिनों का वार्ड 19 के पार्षद काशीराम रात्रे ने पूर्व सभापति एवं पार्षद राजकुमार नारायणी, एल्डरमेन हरीश साहू, शिव वैष्णव एवं अन्य की मौजूदगी में मितानिनों का सम्मान किया गया। महापौर धीरज बाकलीवाल ने कहा कि मितानिनों का कार्य अपने क्षेत्र में महत्वपूर्ण रहता है। बच्चों का टीकाकरण करना, गर्भवती महिलाओं की देख-रेख करना, उन्हें हॉस्पिटल पहुंचाने में मदद करना, बच्चों के स्वास्थ्य के लिए पोषण संबंधी जानकारी देना, स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना, निर्वाचन जैसे महत्वपूर्ण कार्य में योगदान देना आदि कार्यों में योगदान रहता है।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में मितानिन की भूमिका

मितानिन के सहयोग से एक दिव्यांग महिला को प्रमाण पत्र और साईकिल मिली

(भगतसिंह वार्ड क्रमांक 19, भाटापारा)

पारा में 38 वर्षीय रजनी रहती है जो की दोनों पैरो से विकलांग है। पारा की मितानिन जब रजनी के घर परिवार भ्रमण के लिए गयी तो उसे पता चला की रजनी के पास विकलांगता प्रमाण पत्र नहीं है, इस वजह से वह किसी भी सरकारी योजना का लाभ नहीं ले पा रही है। मितानिन ने सबसे पहले रजनी का विकलांगता प्रमाण पत्र का आवेदन भरवाया और रजनी का विकलांगता प्रमाण पत्र बनवाया। विकलांगता प्रमाण पत्र बनने के बाद मितानिन ने रजनी को ट्राईसाईकिल दिलवाई। रजनी अब अपने से कही भी जाना होता है तो वह चली जाती है।

- तनुजा धृतलहरे-मितानिन

मितानिन ने कोविड टीका को लेकर लोगों के बीच भ्रम को तोड़ा (वार्ड क्र.15 बाजार चौक, साहू पारा, भिलाई 3)

साहू पारा में लोग कोरोना टीका लगवाने स बहुत डर रहे थे और कोरोना टीका को लेकर बहुत सारी अफवाहों जैसे टीका लगवाने का 250/– रूपये लगता है, टीका लगवाने के बाद चक्कर आता है, तबियत खराब हो जाती है और बहुत से लोगों की मृत्यु भी हो रही है। इन सब अफवाहों के कारण कई लोग अस्पताल से भी वापस लौट रहे थे। पारा की मितानिन ने परिवार भ्रमण कर और पारा बैठक कर को लोगों को समझाया कि सरकार की तरफ से मुफ्त में टीका लगवाया जा रहा है और अपने घर के सभी लोगों को टीका लगने के बाद सभी के स्वस्थ होने का उदहारण भी दिया। मितानिन ने उन्हें यह भी समझाया की टीका लगने के बाद अस्पताल में आधा घंटा रखते हैं और अगर तबियत ठीक नहीं लगता है तो डॉक्टर तुरंत इलाज करते हैं। मितानिन ने लोगों को समझाकर टीका लगवाने के लिए भेजा। टीका लगवाने के बाद लोगों ने पारा के दूसरे लोगों को भी टीका लगवाने के लिए प्रोत्साहित किया और मितानिन को धन्यवाद दिया।

- तुलेश्वरी साहू-मितानिन

मितानिन और डाक्टर के प्रयास विकलांग नवजात को मिला नया जीवन (अंबिकापुर)

पारा में रहने वाली रानी को प्रसव पीड़ा होने पर मितानिन उसे जिला अस्पताल लेकर गयी। जिला अस्पताल में प्रसव अच्छे से हो गया परन्तु बच्चा विकलांग पैदा हुआ। बच्चे की एक आंख नहीं थी और होंठ कटा हुआ था। अस्पताल की नर्स इस बात की जानकरी डॉक्टर को भी नहीं दे रही थी। मितानिन ने विकलांग बच्चे के जन्म की जानकरी अपनी एम.टी. को भेजी एम.टी. ने यह जानकरी व्हाट्सएप के समूह में डाल दी। इस समूह में सी.पी.एम. और डॉक्टर भी थे तो उन्हें नवजात की जानकरी मिल गयी। जानकरी मिलते ही डॉक्टर ने एम.टी. से संपर्क किया और नवजात के परिवार की पूरी जानकरी मांगी नवजात के इलाज के लिए डाक्टरों से बात की। डाक्टरों की सहायता से सी.पी.एम. के द्वारा चिरायु के तहत नवजात को रायपुर रेफर कर दिए। पहले माह बच्चे का आंख का ऑपरेशन किया गया और तीसरे माह कटे हुए होंठ का। इसके साथ ही साथ नवजात के माता पिता का आने जाने और भोजन का खर्च दिया गया। नवजात के परिवार वाले चिरायु योजना से अपने बच्चे को सामान्य देखकर बहुत खुश है।

- आशा साहू-मितानिन

मितानिन ने एक अंजान गर्भवती मजदूर महिला का प्रसव अस्पताल में करवाया (मकेश्वर वार्ड क्रमांक 9, धमतरी)

वार्ड में एक गर्भवती जिसका 7वां माह चल रहा था अचानक से दर्द चालू हो गया तो उसे 102 से जिला अस्पताल ले जाया गया। अस्पताल में गर्भवती का राशन कार्ड मांगा गया परन्तु गर्भवती बाहर से ईटा भट्टा में काम करने आई थी इसलिए उसके पास कोई भी कागज नहीं थे। अस्पताल में राशन कार्ड मांगने पर वे मजदूर लोग बहुत घरबा गए की उन्हें अब नगद पैसा देना पड़ेगा जो उनके पास नहीं है। गर्भवती का पति उसी समय पारा में मितानिन के घर गया और अपनी पत्नी के बारे में सब बताया। मितानिन खाना पका रही थी परन्तु उसने गर्भवती स्थिति को देखते हुए खाना पकाना छोड़ उसके साथ तुरंत अस्पताल गयी और नर्स से बातचीत कर गर्भवती का प्रसव करवाई। महिला ने 1 किलो 800 ग्राम के बच्चे को जन्म दिया। मितानिन ने प्रसूता माता को बच्चे को कपड़े में लपेट कर अपने से चिपका कर रखने और अपना दूध पिलाते रहने की सलाह दी।

सिकलसेल

सिकल सेल एनिमिया एक खून की कमी वाली गंभीर बीमारी है इस बीमारी की पहचान और इलाज के लिए शहरी मितानिनों के द्वारा वर्ष 2019 से बहुत प्रयास किये जा रहे हैं। इस प्रयास के फलस्वरूप अभी तक सिकल सेल के 2284 मरीजों की पहचान व इलाज करवाया जा रहा है। 2021 में सिकल सेल के लिए प्वाइन्ट आफ केयर टेस्ट की शुरूआत छत्तीसगढ़ में एक पायलेट परियोजना के रूप में की गई जिसमें दुर्ग, भिलाई, चरोदा, महासमुंद और कोरबा शहरी क्षेत्र शामिल थे। इस परियोजना के तहत् मितानिन प्रशिक्षकों के माध्यम से कुल 1515 संभावित लोगों की जांच की गई जिसमें 136 एस.एस. मरीज मिले।

मितानिन प्रशिक्षक के प्रयास से जिला अस्पताल में सिकल सेल के मरीजों को दवा मिलना शुरू हुआ

(जिला-जांजगीर)

जिला अस्पताल जांजगीर में सिकल सेल मरीजों की जांच नहीं होती है और न ही दवा दिया जाता है। शहर की दोनों मितानिन प्रशिक्षक सिकल सेल जांच व दवा के लिए लगातार प्रयास कर रहे थे लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिल रही थी। जांच कराने के लिए संभावित मरीजों को लेकर बिलासपुर सिम्स या सिकल सेल संस्थान रायपुर लाते है परन्तु दवा के लिए मरीजों को हर माह बिलासपुर या रायपुर आने में बहुत परेशानी होती है। दवा के लिए जिला अस्पताल में लगातार बात करना, आवेदन बनाकर देना प्रयास में लगे थे। एक दिन मितानिन प्रशिक्षक अन्नपूर्णा यादव सिकल सेल मरीज के घर परिवार भ्रमण के लिए गई तो मरीज की मां ने बताया की मेरा बेटा दवा खा रहा है। एम.टी. ने दवा दिखाने बोली तो मां ने हाइड्रोक्सी यूरिया का पत्ता लाकर दिखाया। मरीज की मां ने प्रशिक्षक को बताई कि उनके बेटे की जांच बिलासपुर में हुई है लेकिन दवा यही जिला अस्पताल से मिल जाता है और दवा के लिए 400 रू. लेते है। प्रशिक्षक को बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि उन्हें अभी तक अस्पताल वाले यही कहते थे कि यहां हाइड्रोक्सी यूरिया नहीं मिलता है। प्रशिक्षक उस बच्चे को तथा और एस.एस. मरीजों को जिला अस्पताल लेकर गई और वहां से सभी को दवा दिलावाई। इसके बाद से सभी एस.एस. मरीजों को जिला अस्पताल में दवा मिल जाता है।

- अन्नपूर्ण-मितानिन प्रशिक्षक

सिकलसेल पीड़ित लड़के की जांच इलाज और विकलांगता प्रमाण पात्र बनाने में मितानिन ने मदद की (वार्ड क्र. 25, कुम्हार पारा, महासमुंद)

पारा की मितानिन रेखा साहू को परिवार भ्रमण के दौरान सिकलसेल के एक संभावित मरीज के बारे में पता चला। मितानिन उस संभावित मरीज से मिलने के लिए उसके घर गई। संभावित मरीज के परिवार वालों ने बताया की उनका 25 वर्षीय बेटा बार–बार बीमार पड़ता है, काम–काज करने में मन नहीं लगता और हमेशा शरीर में दर्द की शिकायत करता है। मितानिन ने अपनी एम.टी. को इस मरीज के बारे में जानकरी दी। दूसरे दिन एम.टी. और मितानिन दोनों मिलकर उस परिवार से मिलने गए और उन्हें अपने बेटे की सिकलसेल की जांच करवाने के लिए समझाए। परिवार वाले मान गए और बेटे को एक सप्ताह बाद रायपुर सिकलसेल संस्थान जांच के लिए लेकर गए। जांच में लड़के को एस.एस. निकला और हाईड्रोक्सी यूरिया दवा शुरू की गई। दो माह बाद उस लड़के का जिला अस्पताल से विकलांगता प्रमाण पत्र बनाया गया और इसके आधार पर नगर निगम में पेंशन योजना में नाम जोड़ा गया। लड़का और उसके परिवार के लोग मितानिन के सहयोग के लिए बहुत आभार व्यक्त किया।

- रेखा साहू-मितानिन

सिकलसेल पीड़ित पिता और बेटी के इलाज में मितानिन ने की मदद (वार्ड 6, उड़िया बस्ती, शंकर पारा, सुपेला, भिलाई)

पारा का एक 42 वर्षीय व्यक्ति है जो हमेशा बीमार रहता था और निजी अस्पताल में जांच में शरीर में खून की कमी को पहचाना गया। शरीर में खून की कमी होने के करण उस व्यक्ति को प्रत्येक 3–4 माह में खून चढ़ाना पड़ता था जिसमें 15 हजार तक खर्चा हो जाता था। कुछ समय बाद उस व्यक्ति की बेटी को भी हाथ पैर में दर्द, खून की कमी और कमजोरी की शिकायत होने लगी। बेटी बीमार रहने के कारण संकुल भी नहीं जा पा रही थी। बेटी का इलाज सेक्टर 9 अस्पताल में चलने लगा। पिता और बेटी के इलाज में हर 3–4 माह में 30 हजार रूपये खर्च हो रहे थे। मितानिनों के द्वारा सिकलसेल अभियान के दौरान इस परिवार के बारे में पता चला। पारा की मितानिन और एम.टी. इस परिवार से मिलने गए और उन्हें जांच के लिए सिकलसेल संस्थान लेकर गए। जांच में पिता और बेटी कों निकला। मितानिन ने उन दोनों का कार्ड बनवाया और दोनों की दवा शुरू हो गयी। सिकलसेल संस्थान से इलाज में एक भी पैसा खर्च नहीं हुआ। पिता और बेटी दोनों नियमित दवा खा रहे हैं और अब उन्हें भिलाई के लाल बहादुर अस्पताल से दवा मिल जाती है।

- एम.टी.

मानसिक स्वास्थ्य

मानसिक रोग की पहचान और इलाज की दिशा मितानिन द्वारा किये जा रहे प्रयास-मानसिक रोगी का अगर इलाज करवाया जाए तो वह ठीक हो सकता है और एक खुशहाल जीवन जी सकता है। राज्य में शहरी मितानिन कार्यक्रम के द्वारा इसी सोच के आधार पर लोगों के संपूर्ण स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए शारीरिक स्वास्थ्य के साथ ही साथ मानसिक स्वास्थ्य पर भी जागरूकता, मरीज की पहचान और इलाज की दिशा में 4 जनवरी 2021 से कार्य किया जा रहा है। मानसिक रोग पर कार्य के अंतर्गत मितानिनों के द्वारा 19 शहरों में 11 माह में 1192 मानसिक रोगियों की पहचान कर इलाज के लिए रेफर किया गया एवं 3348 दीवाल लेखन किये गये।

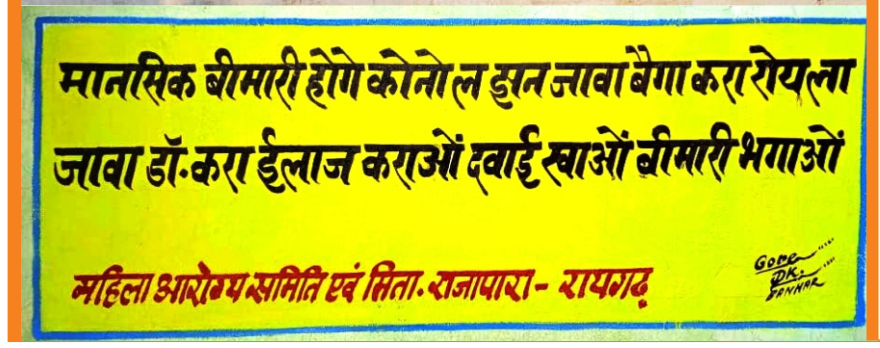

मितानिन और एम.टी. के समझाने पर मानसिक रोगी के परिवार वाले इलाज के लिए माने (वार्ड क्रमांक 29, जेलपारा, रायगढ़)

पारा में एक 22 वर्षीय लड़का रहता है। इस लड़के का जीवन बहुत अच्छे से चल रहा था परन्तु एक दिन अचानक से उसके व्यवहार में परिवर्तन आया। लड़के के परिवार वाले जानबूझ कर ऐसा व्यवहार कर रहा है बोलकर उसे प्रताड़ित कर रहे थे और उसका झाड़फूंक भी करवा रहे थे। लड़के की स्थिति में कोई सुधार नहीं आ रहा था। पारे की मितानिन तुलसी चौहान को परिवार भ्रमण के दौरान लड़के की स्थिति के बारे में पता चला। मितानिन ने लड़के के परिवार वालों को मानसिक स्वास्थ्य के बारे समझाया लेकिन परिवार वाले मितानिन की बात को टाल दिए। मितानिन ने हार नहीं मानी और अपनी मितानिन प्रशिक्षक के साथ फिर से दूसरे दिन लड़के के घर वालों को समझाने गयी। एम.टी. और मितानिन ने लड़के के परिवार वालों को बैठाकर अच्छे से समझाया तो परिवार वालों को समझ में आया की उनके बेटे को मानसिक रोग हो गया है और उसका इलाज हो सकता है। परिवार वाले लड़के को मितानिन के सहयोग से जिला अस्पताल लेकर गए जहां लड़के का जांच के बाद इलाज चालू हुआ। अभी वह लड़का पहले से ठीक है।

-तुलसी चौहान-मितानिन

मितानिन ने 7 साल के गंभीर मानसिक रोगी बच्चे का इलाज करवाया (कैलाश नगर धमधा नाका, वार्ड 32, दुर्ग)

पारा में के 7 वर्षीय बच्चा है जो की मानसिक रोगी है। इस बच्चे को मां बाप भी छोड़ चुके थे। पारा की मितानिन ने बच्चे की मां को मानसिक रोग का इलाज के लिए समझाया। बच्चे की मां बच्चे की शैतानियों से बहुत परेशान थी। मितानिन और उसकी मां मिलकर संभालते थे। बच्चे को ऑटो में ले जाने से वह किसी को भी पकड कर खींच देता था किसी पर भी थूक देता था। अस्पताल लाने ले जाने में मितानिन और बच्चे की मां परेशान हो जाते थे परन्तु मितानिन बच्चे की किसी भी बात का बुरा नहीं मानती थी और उसे इलाज में पूरी मदद करती थी। 12 अगस्त 2021 को बच्चे का इलाज पूरा हुआ और अब बच्चे के स्वास्थ्य में पहले से बहुत सुधार आया है।

- मंजू मेश्राम-मितानिन

नशा मानसिक रोग का एक करण हो सकता है (अंबिकापुर)

अंबिकापुर की एक मितानिन अपने पति के शराब की आदत से बहुत परेशान रहती थी। कुछ दिन के बाद उसके पति ने शराब पीना बंद कर दिया और उसे कुछ आवाजे सुनाई देती थी। वह अपनी पत्नी को भी उन आवाजों को सुनाने बुलाता था और बोलता था की उसे कुछ लोग मारने आ रहे हैं। इतने ही नहीं कही भी अगर चार लोग बात करते हुए दीखते थे तो उसे यह लगता था की वे सब उसके बारे में ही बात कर रहे हैं और उसकी बुराई कर रहे हैं। इसी दौरान मितानिन को मानसिक रोग पर प्रशिक्षण मिला। प्रशिक्षण के बाद मितानिन को अपने पति में मानसिक रोग के लक्षण समझ में आने लगे। मितानिन ने अपनी एम.टी. को अपने पति के लक्षणों के बारे में बताया। एम.टी. ने मितानिन से अपने पति को जिला अस्पताल ले जाने की सलाह दी। मितानिन अपने पति को जिला अस्पताल लेकर गयी और जांच करवाई। जिला अस्पताल में डाक्टर ने जांच के बाद मितानिन के पति को दवा दी। समय पर दवा खाने के बाद आज मितानिन का पति एकदम स्वस्थ है।

- गीता किसपोट्टा-मितानिन

नींद नहीं आना भी मानसिक रोग का एक लक्षण है (गुरूनानक वार्ड क्र. 22, भाटापारा)

पारा में एक व्यक्ति था जो की 22 दिन और 22 रात से नहीं सोया था। मितानिन को परिवार भ्रमण के दौरान उस व्यक्ति की पत्नी ने अपने पति के बारे में पूरी जानकारी दी। मितानिन को लक्षण से वह व्यक्ति समान्य मानसिक रोगी लगा। मितानिन ने उस व्यक्ति से और उसकी पत्नी से बातचीत कर उन्हें जिला अस्पताल में जांच के लिए चलने के लिए कहा तो वे मान गए। यह परिवार बहुत गरीब होने की वजह से बलौदाबाजार जिला अस्पताल इलाज के लिए जाने के लिए मितानिन ने महिला आरोग्य समिति से 500 की राशि का सहयोग दिलाया। मितानिन उस व्यक्ति को उसकी पत्नी के साथ बलौदाबाजार जिला अस्पताल लेकर गयी और जांच के बाद उन्हें दवा दी गयी। नियम से दवा खाने के बाद वह व्यक्ति बिल्कुल ठीक हो गया।

- उषा कुर्रे-मितानिन

दूसरों को मारने के डर से जंजीर में बंधा मानसिक रोगी इलाज से ठीक हो गया (वार्ड क्र. 7 गुरूघासीदास नगर, भिलाई-3, चरोदा)

पारा में के परिवार रहता है जिसमें पति पत्नी और तीन बेटे हैं। जून माह से एक बेटा अपने आप में बड़बड़ाने लगा था, किसी से बात नहीं करता था। सामान को तोड़ देता था और किसी को कुछ भी फेंक कर मार देता था। परिवार वाले अपने बेटे का झाड़फूंक से इलाज करवाने लगे और 10 हजार रूपये भी खर्च कर दिए परन्तु बेटे के स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं आया। मितानिन को जब पता चला तो वह उनके घर गयी तो उसने देखा की परिवार वालों ने अपने बेटे को डर के कारण जंजीर में बांध कर रखा था। मितानिन ने परिवार वालों को लड़के को जंजीर खोलने के लिए समझाया परन्तु वे किसी को भी मार देगा इस डर से उसे नहीं खोले। मितानिन ने उन्हें झाड़फूंक नहीं बल्कि अस्पताल में इलाज के लिए समझाया लेकिन वे तैयार नहीं हुए। मितानिन और एम.टी. के साथ उनके घर गयी और उन्हें फिर से समझाए की मानसिक रोग का इलाज है तो परिवार वाले इलाज करवाने के लिए मान गए। मितानिन ने लड़के व परिवार वाले के साथ जिला अस्पताल गए जहां एक माह की दवा दी और वहां से रेफर कर शंकराचार्य अस्पताल में 15 दिनों के लिए भर्ती रखकर इलाज किया गया। डेढ़ माह तक इलाज के बाद लड़के के स्वास्थ्य में बहुत अच्छा सुधार आया अब वह काम पर जाने लगा है और अपने परिवार का सहयोग कर रहा है।

महिला आरोग्य समिति

डेंगू मच्छर के काटने से होने वाली एक गंभीर बीमारी है। डेंगू के खतरों से लोगों को बचाने के लिए शहरी मितानिन कार्यक्रम के अंतर्गत मितानिन एवं महिला आरोग्य समिति के सदस्यों द्वारा 19 शहरो में डेंगू से बचाव व रोकथाम के निम्न प्रयास किये गए जिसमें घर-घर जाकर कूलर और पानी के अन्य स्त्रोतों को खाली करना, गंदे पानी के गड्ढों में जला हुआ आयल डालना, पेड़ पौधों के आस-पास सफाई, गन्दी जगहों में ब्लीचिंग पाउडर डालना एवं सप्ताह में के दिन सूखा दिवस मनाना जैसे प्रयसों से अपने पारे-मोहल्ले को डेंगू के खतरे से बचाया।

डेंगू के इलाज के नाम पर झोलाछाप डाक्टरों द्वारा किये जा रहे भ्रष्टाचार को मितानिन ने रोका

(रामसागर वार्ड क्र, 25, छोटा राम नगर, रायपुर)

छोटे राम नगर में डेंगू के एक मरीज से डॉक्टर ने जांच के 1700 रूपए लिए। इसी तरह डेंगू के अन्य मरीजों को झोलाछाप डाक्टरों के द्वारा डराया जा रहा था कि आपका प्लेटलेट कम है, निजी अस्पताल में भर्ती हो जाओ नहीं तो जान चली जाएगी। डेंगू के नाम पर मरीजों को अपने क्लिनिक में ग्लूकोज चढ़ा कर इलाज किया जा रहा था जिससे मरीजों की हालत और गंभीर हो रही थी। मितानिनों को जब एक से दो मरीजों से यह सुनने को मिला तो मितानिन ने सभी मरीजों और पारा के लोगों को समझाया गया की डेंगू का इलाज सरकारी अस्पताल में मुफ्त होता है। हर डेंगू के मरीज को अस्पताल में भर्ती होने की जरुरत नहीं पड़ती है। मितानिन के समझाने पर डेंगू के लक्षण वाले सभी मरीज सरकारी स्वास्थ्य केंद्र में इलाज के लिए गए और सही समय पर सही इलाज होने से सभी ठीक भी हो गए।

- राजमणि यादव-मितानिन

पैसे की कमी की वजह से इलाज नहीं करवा पाने वाले मरीज का मितानिन और समिति ने सरकारी अस्पताल में इलाज करवाया **(बोरखा गली पारा क्र. 27 संतोषी वार्ड, जगदलपुर)**

पारा में रहने वाले एक परिवार के बेटे के पैर में किल गड़ने के कारण घाव हो गया था। उसके परिवार के पास पैसा नहीं होने की वजह से वे इलाज नहीं करवा पा रहे थे। पारा की मितानिन को पता चला की युवक के पैर में घाव हुआ है तो उसने महिला आरोग्य समिति की मदद से परिवार से बात किये और उन्हें समझाया की घाव का सही समय पर इलाज नहीं करवाने से नुकसान हो सकता है। परिवार वाले डर रहे थे की इलाज में बहुत पैसा लगेगा, मितानिन और समिति के लोगों ने उन्हें समझाया की सरकारी अस्पताल में इलाज मुफ्त में होता है। मितानिन युवक को जिला अस्पताल लेकर गयी और उसका इलाज करवाई। आज वह युवक ठीक से चल पा रहा है।

- महिला आरोग्य समिति

समिति के प्रयास से वृद्धा को मिली पेंशन **(वार्ड क्रमांक 13, हल्दीबाड़ी, चिरमिरी)**

पारा में रूकमन नाम की एक महिला रहती है जो की पति की मृत्यु के बाद एकदम अकेली रह गयी। रुकमन के पास जीवन यापन का कोई साधन नहीं था और उसे वृद्धा पेंशन भी नहीं मिल रही थी। पारा की मितानिन अमृता और मितानिन प्रशिक्षक यशोदा को परिवार भ्रमण के दौरान रुकमन से मिलकर यह जानकरी मिली। दूसरे दिन ही मितानिन ने रुकमन का वृद्धा पेंशन का आवेदन तैयार कर जमा कर दिया और साथ ही पति की मृत्यु के बाद नगर निगम से जो राशि मिलती है उसे भी रुकमन को दिलवाया। अगले माह से ही रुकमन को विधवा पेंशन भी मिलना शुरू हो गयी। मितानिन के सहयोग से रुकमन की जीवनयापन की समस्या का हल हो गया और वह खुश है।

- अमृता-मितानिन

लड़की के साथ छेड़छाड़ करने वाले को समिति ने जेल भेजा **(वार्ड 17, वसुंधरा नगर, नहरपारा-भिलाई)**

नहर पारा में एक लड़की रहती है जिसके साथ पारा का ही एक लड़का छेड़छाड़ करता था, उसे गंदे मैसेज भेजता था, गन्दी बाते करता था। लड़की बहुत दिनों तक सहती रही परन्तु एक दिन उसने पारा की मितानिन को सब बता दिया। मितानिन ने समिति की बैठक में सदस्यों को बताया जिसमें लड़की और लड़के के परिवार वालों को बुलाकर समझाया गया लेकिन लड़का समिति की कोई बात नहीं सुन रहा था। समिति के द्वारा लड़के के व्यवहार को देखते हुए 112 को फोन किया गया और समिति के सभी सदस्य लड़की के परिवार वालों के साथ गए और थाने में रिपोर्ट लिखवाए। रिपोर्ट के आधार पर लड़के को जेल हो गयी। लड़के के जेल जाने के बाद लड़की का मानसिक तनाव खत्म हुआ।

- महिला आरोग्य समिति

मितानिन और महिला आरोग्य समिति के प्रयास से परिवार टूटने से बचा (वार्ड क्र. 32, फटहामुड़ा, रायगढ़)

पारा में एक परिवार है जिन्होंने अपनी पसंद से शादी की और अब उनका तीन साल का एक बेटा भी है। कुछ समय पहले दोनों पति–पत्नी में बहुत झगड़ा होने लगा। पत्नी ने पारा की मितानिन को जाकर अपना हाल बताया कि उसका पति उसे शराब पीकर मारता है और जबरदस्ती शारीरिक संबंध बनाना चाहता है। पत्नी ने मितानिन को यह भी बताया की उसके घर की आर्थिक स्थिति सही नहीं है और वह अभी दूसरा बच्चा भी नहीं चाहती है। मितानिन महिला के घर जाकर पति को समझाई तो 6 माह तक सब ठीक रहा लेकिन उसके बाद फिर से लडाई झगड़ा शुरू हो गया। पत्नी फिर से मितानिन के पास आई तो मितानिन ने उससे पूछा की तुम क्या चाहती हो तो पत्नी ने बोला की उसे तलाक चाहिए। मितानिन ने महिला आरोग्य समिति में भी इस परिवार के बारे में बात की और समिति द्वारा भी समझाने का प्रयास किया गया परन्तु कोई बात नहीं बनी और झगड़ा बढ़ गया। मितानिन महिला को सखी सेंटर लेकर गयी। वहां जाने के बाद दोनों पति पत्नी अलग रहने लगे और कोर्ट में केस चला। केस चलने के बाद अंत में दोनों का राजीनामा हो गया और दोनों पति पत्नी खुश है।

- त्रिवेणी कहार-मितानिन

शराबी पति के शराब छोड़ने के वादे पर मितानिन और महिला आरोग्य समिति ने पत्नी को वापस घर बुलाया

वार्ड क्र. 20 कैलाश नगर, बिरगांव

पारा में एक परिवार है जिसमें पति–पत्नी और दो बेटे हैं। पति रोज शराब और गांजे का नशा कर पत्नी के साथ झगड़ा करता था और अपनी कमाई भी घर खर्च के लिए नहीं देता था। घर की आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गयी थी। ये सब से परेशान होकर पत्नी अपने बेटों को लेकर मायके चली गयी और तलाक की मांग करने लगी। पति अपनी पत्नी से बात करने की बहुत कोशिश करता था परन्तु पत्नी के घर वाले उसकी बात नहीं करवाते थे। एक दिन पति आकर पारा की मितानिन और महिला आरोग्य समिति के सदस्यों से मिला और नशा छोड़ने का वादा करते हुए अपनी पत्नी को वापस बुलाने के लिए मदद मांगने लगा। मितानिन और महिला आरोग्य समिति के सदस्यों ने पत्नी के मायके वालों से बात की पत्नी को समझाकर वापस लाया गया। अब पति अपनी पत्नी को अच्छे से रख रहा है।

- पुष्प राणा-मितानिन

समिति ने पानी की जांच कर लोगों को गंदा पानी से होने वाली बीमारी से बचाया (वार्ड क्र.-35, दुर्गा नगर, बिरगांव)

पारा में महिला आरोग्य समिति के द्वारा पारा के पानी के स्त्रोत की एच 2 एस किट से पानी की जांच की। जांच में पानी काला निकला तो समिति के द्वारा वार्ड पार्षद को सूचना दी गयी। पार्षद ने तुरंत नगर निगम को सूचित किया तो निगम के कर्मचारियों ने पानी के स्त्रोत में दवा डाली और पारा की मितानिन और समिति के सहयोग से सभी पारा वालों को एक सप्ताह तक उस पानी को नहीं पीने के लिए समझाया गया। एक सप्ताह बाद फिर से निगम के कर्मचारी पारा में आए और समिति के सदस्यों के सामने पानी के स्त्रोत से पानी की जांच किये। जांच में पानी साफ निकला तब समिति के द्वारा पारा वालों को पानी का उपयोग करने की सूचना दी गई।

प्रदूषण को रोकने के लिए मितानिन, महिला आरोग्य समिति के लोग कर रहे हैं प्रयास (शहर-कोरबा)

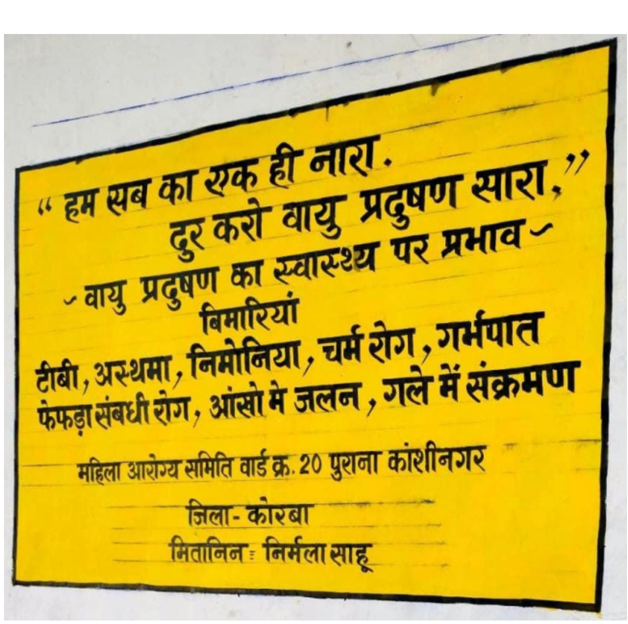

जलवायु परिवर्तन पर अप्रैल माह से कोरबा जिले में कार्य किया जा रहा है। कोरबा जिले के शहरी मितानिनें, महिला आरोग्य समिति के सदस्यों के द्वारा पारा में लोगो को जलवायु परिवर्तन के कारणों और उसके दुष्प्रभावों को रोकने के उपाय पर जागरूकता का प्रयास किया जा रहा है। इसी प्रयास के तहत कोरबा जिला अस्पताल में एटमॉस मानिटर लगाया गया है और इसे समझने के लिए जनसमुदाय को भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है। महिला आरोग्य समिति के सदस्यों द्वारा समुदाय को जागरूक करने के लिए दीवाल लेखन और नुक्कड़ नाटक भी दिखाया जा रहा है। समिति और मितानिन के प्रयास से समुदाय ने प्रदूषण के मुद्दे पर अपनी एक समझ पैदा की है जिसके फलस्वरूप पारा में धुआं रहित चुल्हा और वृक्षारोपण का कार्य किया जा रहा है। पारा स्तर पर वायु प्रदूषण को रोकने के लिए समिति के द्वारा पार्षद को अभी तक 22 आवेदन दिए गए हैं। पार्षद द्वारा कार्यवाही का आश्वासन दिया गया है।

-नेहा महंत

धुंआ रहित चूल्हा

धुंआ रहित चूल्हा महिलाओं के स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए एक विशेष प्रयास-महिलाओं को रसोई में काम करते समय चूल्हे से निकलने वाला धुआं उनकी सेहत के लिए बहुत हानिकारक होता है। चूल्हे से निकलने वाले धुएं से आँखों में जलन, खांसी, सांस लेने में परेशानी जैसी समस्या का सामना करना पड़ता है और जाने अंजाने बहुत सी महिलाओं की जाने भी चली जाती है। महिलाओं के सवास्थ्य के विषय में इसे एक चिंता का विषय पहचनाते हुए छत्तीसगढ़ के मितानिन कार्यक्रम के द्वारा इसके समाधान के लिए धुआं रहित चूल्हा का निर्माण महिला स्वास्थ्य के एक विकल्प के रूप में अपनाए जाने का प्रयास किया गया। आज राज्य के 28 जिलों के 13 शहरों में 1259 चूल्हों का निर्माण किया गया है।

धुंआ रहित चूल्हा अच्छे स्वास्थ्य में सहायक है (वार्ड क्र. 36 मिटठूमुड़ा, रायगढ़)

मितानिन नर्मदा भारती के पारे में एक घर में एम.टी. और ए.सी. के सहयोग से धुंआ रहित चूल्हा बनाने की तैयारी कर रहे थे। उसी समय परिवार का एक सदस्य शराब पीकर आया और लड़ाई झगड़ा करने लगा कहने लगा की आप लोगों को और कोई काम नहीं है क्या जो हमारे घर में चूल्हा बना रहे हो। मितानिन और साथियों ने उस व्यक्ति को समझाया कि इस चूल्हे के बहुत फायदे हैं पहले बना लेने दीजिये फिर इस चूल्हे के फायदे देखना। मितानिन और साथियों ने चूल्हा बनाया और उसे जला कर दिखाया। चूल्हा का धुआं पाईप से ऊपर जा रहा था और कम लकड़ी और बर्तनों में दाग भी लगा देख सभी लोग बहुत खुश हो गए। जो व्यक्ति धुंआ रहित चूल्हा बनाने के लिए मना कर रहा था अब वही व्यक्ति धुआ रहित चूल्हे के फायदे को देख मितानिन और साथियों को धन्यवाद देता है की उसके घर वालों को धुंआ से बचा लिए और लकड़ी का बोझ भी कम कर दिए। **-नर्मदा भारती-मितानिन**

धुआ रहित चूल्हा के फायदे देख पारा के घरो में लोगो ने चूल्हे को अपने घरो में बनवाया (वार्ड क्र. 25, कुआँभट्ठा, कोरबा)

पारा की मितानिन सुनीता याद ने धुंए से बचने के लिए एम.टी. जागेश्वरी और बाबी एवं सरस्वती मितानिन के सहयोग से अपने घर में धुंआ रहित चूल्हा बनवाया। इसी के बाद गांव में महिला आरोग्य समिति की बैठक की गयी बैठक के बाद समिति के सभी सदस्य मितानिन के घर बने धुंआ रहित चूल्हे के फायदे को देखते हुए बहुत खुश हुए। दूसरे दिन समिति के एक सदस्य निशा ने अपने घर में धुंआ रहित चूल्हा मितानिन के सहयोग से बनाया और उन्हें देख पारा में रहने वाली अन्य महिलाओं ने भी अपने–अपने घरों में धुंआ रहित चूल्हा बनवाने के लिए तैयार हो गए। **-सुनीता यादव**

ज्याद सदस्यों वाले घर में धुंआ रहित चूल्हा बनाकर सदस्यों को धुंए और खर्च दोनों से बचाया गया

वार्ड क्रामंक 50, रानी दुर्गावती वार्ड, रायपुर

पारा के घर में 25 सदस्य रहते हैं और उनके घर में चूल्हे में सभी के लिए खाना बनता था। गैस की खपत ज्यादा होने के करण वे लोग गैस में खाना नहीं बनाते थे। इसी दौरान पारा में महिला आरोग्य समिति की बैठक की गयी बैठक में एम.टी. रमला टंडन ने धुंआ रहित चूल्हा के बारे में जानकरी दी और महिलाओं से चर्चा की। बैठक में इस घर की महिला भी आई थी। बैठक के बाद महिला ने एम.टी. से अपने घर के बारे में बताया। बैठक के बाद एम.टी. उस महिला के साथ उसके घर चूल्हा बनाने की जगह को देखने के लिए गयी। एम.टी. ने महिला के घर जाकर उनके घर वालों को धुंआ रहित चूल्हे से कम खर्च में कम धुंए में खाना बनाए जाने के फायदे के बारे में बताया तो घर वाले धुंआ रहित चूल्हा अपने घर में बनवाने के लिए मान गए। अब उस घर में धुंआ रहित चूल्हे में खाना पकता है। **-एम.टी.-रमला टंडन**

पारा के लोगों को जागरूक करने समिति के सदस्यों और मितानिन ने अपने घरों में धुआं रहित चूल्हे बनाए

वार्ड क्र. 26 मुड़ापार, कोरबा

पारा में महिला आरोग्य समिति की बैठक में धुंआ रहित चूल्हे के फायदे जिसमें धुंए से फैलने वाली बीमारी से बचाव, कम लकड़ी, रसोई साफ रहेगी आदि के बारे में चर्चा की गयी और उसके फायदों के बारे में सबको बताया गया। बैठक के बाद दूसरे दिन समिति के सभी सदस्यों एवं मितानिन ने अपने घर में धुंआ रहित चूल्हे को बनाया।

-सुनीता चौहान-मितानिन